नक्कारा वाद्य के बदलते प्रारूप का विवेचनात्मक अध्ययनः विशेषकर वादन वैशिष्ट्य एवं प्रयोगात्मक सन्दर्भ में

दयालबाग ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा से संगीत विषय में
पीएच.डी. की उपाधि हेतु
शोध-प्रबंध की प्रस्तावित-रूपरेखा

शोधकर्त्री

अर्चा श्रीवास्तव

शोध निर्देशिका

प्रो. रश्मि श्रीवास्तव

संगीत विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा-282005

2023

भूमिका-

संगीत सृष्टि की एक अमूल्य धरोहर है जिसका विकास मनुष्य के जन्म के साथ ही हुआ। मानव जीवन के विकास में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। संगीत कला अनादि काल से ही मानव के हृदय गत भावों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम रही है। मानव ने जीवन की समस्त क्रिया कलापों व चेष्टाओं को प्रकट करने के लिए विभिन्न ध्वनि, संकेत या चिह्नों का निर्माण किया जिसके माध्यम से विचारों के आदान-प्रदान को लिख, पढ़, बोल व समझा जा सके तथा आगे की पीढ़ी के लिए संरक्षित कर सकें, उन चिन्हों को 'भाषा' के रूप में परिभाषित किया गया। मनुष्य ने सभ्यता व संस्कृति के साथ-साथ जब अपनी अभिव्यक्ति में स्वर, लय, ताल व भाव भंगिमाओं का सहारा लिया तो वही नादात्मक अभिव्यक्ति संगीत कला (जो कि गायन वादन एवं नृत्य तीन धाराओं का संगम है), के रूप में जानी गयी है। जिसमें भावभंगिमाओं के माध्यम से जब मानव ने अपनी अभिव्यक्ति की तो यह नृत्य कला के रूप में विकसित हुई जब स्वर, लय तथा बोलों के समावेश के साथ भावाभिव्क्ति की गई तो वह गीत के रूप में प्रस्फुटित हुआ और जब विभिन्न उपकरणों में ध्वनि उत्पत्ति के माध्यम से न केवल भावों की अभिव्यक्ति अपितु सौंदर्य रसाभिवृद्धि भी की गयी तो विभिन्न भारतीय वाद्यों का सृजन हुआ। और इन वाद्यों की परंपरा भारतीय संगीत में प्राचीन काल से भिन्न-भिन्न रूपों में देखी जा सकती है। यह वाद्य मूलतः चार श्रेणी में दिखाई पड़ते हैं- तत्, सुषिर, घन, अवनद्ध।

प्रस्तुत शोध चूंकि अवनद्ध वाद्य से संबंधित है अतः अवनद्ध वाद्य तात्पर्य अर्थात् ऐसे वाद्य, जो अंदर से खोखले तथा जिनके मुख चर्म से आच्छादित होते हैं और उसे चमड़े पर प्रहार से ध्वनि उत्पन्न की जाती है उन्हें अवनद्ध वाद्य कहते हैं। अवनद्ध वाद्यों के क्षेत्र में दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से ही भारतीय संगीत में असंख्य अवनद्ध वाद्य प्रयोग में लाए जाते रहे हैं जिसका प्रमाण हमें नाट्यशास्त्र में प्राप्त होता है जिसमें भरतमुनि द्वारा लगभग सौ से अधिक अवनद्ध वाद्यों का उल्लेख किया गया है।

काल परिवर्तन के साथ-साथ इन अवनद्ध वाद्यों के क्षेत्र में, जैसे इनके ढांचेगत स्वरूप, वादन विधि, उनके प्रयोग एवं उनकी उपयोगिता की दृष्टि से बहुत से परिवर्तन आते गए।

कला नित्य, नवीन और परिवर्तनशील होती है उसमें निरंतर सृजन व परिवर्तन होता रहता है। जैसे-जैसे भारतीय

संगीत में परिवर्तन आया, उसी से तादात्म्य स्थापित करते करते अवनद्ध वाद्यों के क्षेत्र में भी परिवर्तन आता चला गया तथा मध्यकाल तक आते-आते भारतीय संस्कृति में जब यवन संस्कृति का समावेश हुआ तो भारतीय संगीत की गायन शैलियों, नृत्य शैलियों, इनके प्रस्तुतिकरण आदि के क्षेत्र में भी विभिन्न परिवर्तन हुए। इन परिविर्तनों के अनुरूप ही भारतीय वाद्यों के क्षेत्र में भी परिवर्तन आए। इन दोनों ही संस्कृतियों के मेल के परिणाम स्वरूप कुछ वाद्य सार्वभौमिक तथा सर्वकालिक रहे तथा कुछ वाद्य उनकी उपयोगिता की कमी के कारण विलुप्त हो गए तथा कुछ वाद्य नवीन नामकरण तथा नए कलेवर से प्रचार में आए। किंतु व्यापक दृष्टि से देखें तो अधिकतर ऐसे अवनद्ध वाद्य हैं जो परिवर्तित स्वरूप में वर्तमान समय में भी प्रयोग में लाए जा रहे हैं जैसे पखावज, ढोलक, मृदंगम्, खोल, दुन्दुभि (नगाड़ा) इत्यादि।

विषय का प्रादुर्भाव-

जैसे कि उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारतीय संगीत में वाद्यों का विशेषकर अवनद्ध वाद्यों का महत्व अक्षुण्ण है। यह वाद्य न केवल लय व ताल की अवधारणा के लिए प्रयोग में लाए गए अपितु रस सौंदर्य की अभितृद्धि और भावाभिव्यक्ति की कुशल चेष्टा के फलस्वरूप भी प्रयोग में लाए गए। प्राचीन काल में भूमि दुंदुभी, पुष्कर, पणव, दर्दुर, पटह इत्यादि वाद्य प्रमुख अवनद्ध वाद्यों की श्रेणी में आते थे। तत्पश्चात् मध्य काल में कतिपय अवनद्ध वाद्यों में परिवर्तन के फलस्वरूप मर्दल, दमामा, ढोल, हुडुक्का, आवज, भेरी इत्यादि वाद्य भारतीय संगीत जगत में सम्मुख आए और इनमें से बहुत से ऐसे अवनद्ध वाद्य थे जो आधुनिक काल तक प्रयोग में लाए जाते रहे हैं इन्हीं में से एक वाद्य है, 'नक्कारा'।

नक्कारा वाद्य, कटोरों के समान दो नगीय वाद्य हैं, जिसे दो डंडियों की सहायता से बजाया जाता है। इसके एक भाग बड़ा, तांबे अथवा मिट्टी का होता है तथा दूसरा भाग छोटा, लोहे का होता है जिसे 'झील' कहते हैं। इसके बड़े भाग पर भैंस की खाल मढ़ी जाती है तथा छोटा भाग के मुख पर ऊँट की खाल मढ़ी होती है। इसका बड़ा भाग नीचे स्वर में तथा छोटा भाग ऊँचे स्वर में मिला कर बजाया जाता है।

यदि नक्कारा वाद्य की प्राचीनता पर दृष्टिपात करें तो यह वाद्य प्राचीन काल से ही भारतीय संगीत जगत में किसी न किसी रूप में अस्तित्व में था। नया परिवेश, नया वातावरण, नया प्रयोग, नए नामकरण की दृष्टि से यद्यपि इसमें कुछ परिवर्तन आए। अपनी ढांचेगत विशेषता, प्रयोग की दृष्टि से, परिवर्तन की दृष्टि से, वर्ण निकास की दृष्टि से, इसमें बजाई

जाने वाली बोल बंदिशों इत्यादि विशेषताओं के कारण यह वाद्य अवनद्ध वाद्यों में अपना स्थान रखता है। वर्तमान समय में यह वाद्य किस प्रकार प्रयोग में लाया जा रहा है? इसका वर्तमान में क्या स्वरूप है? इस वाद्य की क्या प्राचीनता थी? तथा इसका क्या ऐतिहासिक महत्त्व रहा इत्यादि क्षेत्र में शोधकर्त्री के मन में उत्कण्ठा जागृत हुई फलतः मानस पटल पर उभरे प्रश्नों के समाधान हेतु शोधकर्त्री ने तत् संबंधी साहित्य का अध्ययन किया।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

तालिका 1 शोध प्रबंध

क्रम सं.	**शोध प्रबंध**	**शोधार्थी**
1	उत्तर भारतीय अवनद्ध वाद्यों में परिभाषित शब्दों का विवेचनात्मक अध्ययन	श्री मनोहर भालचंद्र राम मराठे
2	भारतीय संगीत में अवनद्ध वाद्यों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	विनीता श्रीवास्तव
3	भारतीय संगीत में प्रयुक्त अवनद्ध वाद्यों के स्वरूप, उपयोगिता एवं विभिन्न कालों में हुए परिवर्तन	गीत शर्मा
4	भारतीय अवनद्ध वाद्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	जवाहर लाला नायक
5	आचार्य भरत के नाट्य शास्त्र एवं पं. शारंगदेव के संगीत रत्नाकर के ताल एवं वाद्यों का तुलनात्मक, समीक्षात्मक अध्ययन एवं विवेचन तथा आधुनिक उत्तर भारतीय संगीत के ताल विधान में उनका स्थान	शशि शर्मा
6	उत्तर भारतीय संगीत के विकास में अवनद्ध वाद्यों का योगदान एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	कविता मिश्र

तालिका 2 लघु शोध प्रबंध

क्रम सं.	**लघु शोध प्रबंध**	**शोधार्थी**
1	मध्यकाल में प्रयुक्त अवनद्ध वाद्यः विवेचनात्मक अध्ययन	सारिका देवी
2	नाट्यशास्त्र एवं संगीत रत्नाकर ग्रंथ में वर्णित अवनद्ध वाद्यों का तुलनात्मक अध्ययन	ज्योति गुप्ता
3	ब्रज क्षेत्र के प्रमुख मंदिरों में प्रयुक्त होने वाले अवनद्ध वाद्य एवं वादक कलाकार	मुदिता शर्मा
4	ब्रज के लोक गायन शैलियां एवं उन में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख वाद्यों का अध्ययन	रुपाली गुप्ता
5	नाट्यशास्त्र वह संगीत रत्नाकर ग्रंथ में वर्णित पाटाक्षर-एक अध्ययन	दर्शिका तिवारी
6	भारतीय संगीत में अवनद्ध वा़द्यों का अध्ययन ब्रज क्षेत्र के विशेष संदर्भ में	रश्मि श्रीवास्तव

तालिका 3 पत्र पत्रिकाएं

क्रम सं.		लेखक
1	हमारा प्राचीन ताल वाद्य नगाड़ा (ब्रज स्वरांजलि)	श्री मोहन स्वरूप भाटिया (1992)
2	नक्कारे का संरचना और वादन शैली (ब्रज स्वरांजलि)	राजकुमार श्रीवास्तव (1992)
3	संगीत (नौटंकी) का प्राण वाद्य नक्कारा (कला वसुधा)	डॉ. वीरेंद्र कुमार 'चंद्रसखी' (2018)
4	हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में प्रयुक्त वाद्य एवं तालें (संगीत पत्रिका)	मनोहर शर्मा (1984)

नक्कारा वाद्य के विषय में शोधकर्त्री द्वारा विभिन्न पत्र पत्रिकाओं, शोध प्रबंधों, लघुशोध प्रबंधों आदि के अध्ययन के पश्चात् शोधकर्त्री के संज्ञान में आई जानकारी के आधार पर यह स्पष्ट है कि 'नक्कारा' वाद्य से सम्बन्धित विभिन्न विषयों जैसे इसके ढांचेगत स्वरूप, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य आदि विषयों में विस्तृत जानकारी ना प्राप्त होकर किंचित जानकारी प्राप्त होती है। परन्तु इस वाद्य से संबंधित अन्य क्षेत्र अछूते हैं, शोध की संभावना अपेक्षित है अतः इसीलिए नक्कारा वाद्य की प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक की ऐतिहासिक यात्रा को उजागर करना, इस वाद्य में कौन-कौन से वर्णों का वादन किया जाता है एवं उनकी निकास विधि क्या है? इस वाद्य पर किन बोल बंदिशों, वादन प्रकारों एवं वादन सामग्री का वादन किया जाता है? इसकी वादन तकनीक क्या है? इस वाद्य के कौन-कौन से लोकप्रिय कलाकार हैं ? इस वाद्य की उपयोगिता एवं लोकप्रियता किन-किन क्षेत्रों में है? तथा साथ ही नक्कारा वाद्य की उपयोगिता को अक्षुण्ण रखते हुए भविष्य में इसको संजोए रखने हेतु किन उपायों व प्रयासों की आवश्यकता है? इत्यादि बिंदुओं को उजागर करने की दृष्टि से ही शोधकर्त्री ने शोध हेतु निम्नलिखित विषय का चयन किया।

विषय कथन-

"नक्कारा वाद्य के बदलते प्रारूप का विवेचनात्मक अध्ययनः विशेषकर वादन वैशिष्ट्य एवं प्रयोगात्मक सन्दर्भ में"

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या-

वाद्य

- **बृहद हिन्दी पर्यायवाची शब्द-कोश-** बाजा, वादन यन्त्र।
- **मानक विशाल हिंदी शब्दकोश के अनुसार-** बाजा।

प्रारूप

- **राजकमल बृहद हिंदी शब्दकोश के अनुसार-** प्राथमिक रूप, मसौदा, कच्चा-सा पूर्व लेख, प्रालेख।

नक्कारा

- **प्रमाणिक हिंदी कोश के अनुसार-** नगाड़ा।
- **समांतर कोश के अनुसार-** नगाड़ा।

वादन वैशिष्ट्य- वाद्य को बजाने की विशेषता या खासियत।

अध्ययन के उद्देश्य-

- भारतीय उन्नत अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन करना।
- नक्कारा वाद्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ज्ञात करना।
- नक्कारा वाद्य के वादन वैशिष्ट्य के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
- नक्कारा वाद्य पर बजाए जाने वाले वादन प्रकारों की जानकारी प्राप्त करना।
- भारतीय लोक संगीत में नक्कारा वाद्य के महत्व की जानकारी प्राप्त करना।
- कतिपय नक्कारा वादकों के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
- नक्कारा वाद्य पर बजायी जाने वाली वादन सामग्री का लेखन करना।

परिसीमांकन- कार्य एवं समय सीमा तथा विषय का गहनता पूर्वक अध्ययन करने की दृष्टि से प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश तक सीमित रहेगा।

अध्ययन विधि-

विवेचनात्मक, साक्षात्कार, सर्वेक्षणात्मक विधि।

अध्ययन स्रोत/उपकरण-

- दृश्य श्रव्य सामग्री (कम्प्यूटर, इन्टरनेट, टेपरिकॉर्डर, लेपटॉप, मोबाइल)।

- पुस्तक, पत्र पत्रिकाएं, कलाकारों से साक्षात्कार।

अध्ययन के सोपान-

पृष्ठभूमि

प्रथम अध्याय- भारतीय संगीत में प्रयुक्त प्रमुख अवनद्ध वाद्य।

- क्रमिक विकास की दृष्टि से अध्ययन।
- ढांचेगत स्वरूप की दृष्टि से अध्ययन।

द्वितीय अध्याय- नक्कारा वाद्यः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं संरचनात्मक अध्ययन।

तृतीय अध्याय- नक्कारा वाद्यः वादन वैशिष्ट्य का अध्ययन।

- वर्ण/बोल एवं उनकी निकास विधि।
- नक्कारा वाद्य की तालों का परिचय।
- वादन सामग्री (वादन प्रकार एवं उनकी बन्दिशें)।

चतुर्थ अध्याय- कतिपय प्रसिद्ध नक्कारा वादकों का परिचयात्मक अध्ययन।

- जीवन परिचय।
- किये गये योगदान ज्ञात करना।

पंचम अध्याय- नक्कारा वाद्य की संकलित बन्दिशों को लेखन (लिपिबद्ध करना)।

षष्ठम् अध्याय- नक्कारा वाद्य के बदलते प्रारूप का अध्ययन।

निष्कर्ष।

अध्ययन का महत्व-

प्रस्तुत शोध अध्ययन के महत्व की दृष्टि से यदि देखा जाए तो सर्वप्रथम हम यह कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति जो हमारी मूल है जिसमें हमारे संस्कार छिपे हुए हैं यह संस्कार हमारे संगीत में झलकते हैं। भारतीय संगीत की तीनों विधाएं चाहे वह गायन हो, वादन हो अथवा नृत्य हो हमारी प्राचीन काल से वर्तमान तक की संस्कृति को अपने में समाहित करे हुए है। इस दृष्टि से नक्कारा वाद्य, जिसे शोधकर्त्री ने अपने शोध के विषय के रूप में चयनित किया है यदि इस वाद्य पर दृष्टिपात करें तो यह वाद्य प्राचीन काल से वर्तमान काल तक भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को अपने आप

में समेटे हुए है। अस्तु यह हम सभी की महती भूमिका है कि इस धरोहर को संजोकर अगली पीढ़ी को हस्तांतरित कर सकें। वर्तमान में लुप्त होते इस अवनद्ध वाद्य को संरक्षित करना आवश्यक है और यदि इस दिशा में और अधिक शोध कार्य होंगे तथा उसके समाधान निकाले जाएंगे तो बहुत कुछ सीमा तक हम नक्कारा वाद्य को संरक्षित कर सकेंगे।

प्राचीन काल से चली आ रही उन्नत अवनद्ध वाद्यों की वादन विधि जो कालक्रम में पड़ते व्यवधान के कारण अनेकों बार बाधित हुई जिसके परिणाम स्वरूप वर्तमान काल के विद्यार्थी उन वर्णों, बोल समूह, उनकी निकास विधि एवं वादन विधि से पूर्णतः अनभिज्ञ हैं। अतः शोधकर्त्री की दृष्टि से शोध कार्य करने का महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी है कि नक्कारा वाद्य पर बजाने वाले वर्ण, बोल आदि के प्रारंभिक स्वरूप तथा इसमें कालांतर में हुए विभिन्न परिवर्तनों पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डालते हुए इस वाद्य पर बजायी जाने वाली बंदिशों, वादन प्रकारों तथा विभिन्न वादन सामग्री एवं उनकी वादन विधि इत्यादि सभी पहलुओं को अधिक से अधिक संगीत विद्यार्थियों के सम्मुख उजागर किय जा सके।

व्यापक रूप से लोकप्रिय तथा सशक्त वाद्य होने के पश्चात् भी नक्कारा वाद्य का यह दुर्भाग्य रहा है कि इसे तबला, पखावज जैसे ताल वाद्यों के समकक्ष स्थान प्राप्त नहीं हो सका है। नक्कारा वाद्य स्वयं में ही संपूर्ण ताल वाद्य है जिसमें कठिन साधना के पश्चात् ही वादन की निपुणता प्राप्त होती है किंतु फिर भी नक्कारा वाद्य एवं नक्कारा वादकों को संगीत समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है। शास्त्रीय गायन भजन, ग़ज़ल जैसी गायन शैलियों के साथ नक्कारे की संगत ना होने के कारण संभवतः इससे नगरीय सभ्यता से पृथक ग्रामीण अंचल का लोक वाद्य समझे जाने की भ्रान्ति के कारण भी इसे सम्मानजनक स्थान नहीं प्राप्त है।

अस्तु नक्कारा वाद्य की प्राचीन कालीन गौरवशाली स्थिति को पुनः स्थापित कर पूर्व में प्रचलित इस वाद्य की शास्त्रोक्त रीति के किए जाने वाले वादन विधान को प्रकाश में लाना। इस वाद्य पर बजाये जाने वाले वर्ण, बोल समूहों, वादन प्रकारों, विभिन्न बंदिशों का लेखन कर इन्हें संगीत जिज्ञासाओं व विद्यार्थियों के समक्ष उजागर करना। इस वाद्य से संबंधित अनेकों उच्च कोटि के कलाकार जो अपनी इस वादन कला को संजोते हुए अपने-अपने क्षेत्र में साधनारत हैं ऐसे उच्च कोटि के कलाकारों को संगीत समाज में उजागर करना तथा साथ ही साथ नक्कारा वाद्य जो लुप्त प्रायः स्थिति में जा रहा है उन कारणों को खोज कर उसका समाधान यदि प्राप्त होता है और उपर्युक्त इन सभी बिंदुओं व लक्ष्यों की प्राप्ति प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से हो सकेगी तो यह शोध कार्य भविष्य में ताल जगत के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तकें

क्रम सं.	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष
1	'बमबम', डॉ. महेन्द्र प्रसाद शर्मा	अवनद्ध वाद्य सिद्धांत एवं वादन परंपरा	अभिषेक पब्लिकेशन, संस्करण-प्रथम 2008
2	मिश्र, डॉ. शिव नारायण	विभिन्न संगीत परंपराओं के वाद्य एवं वादक	कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
3	मराठे, मनोहर भालचंद्रराव	ताल वाद्य शास्त्र	शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर
4	शुक्ल, योगमाया	तबले का उद्गम, विकास और वादन शैलियां	हिंदी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय, संस्करण-2003
5	भार्गव, डॉ. अंजना	भारतीय संगीत शास्त्र में वाद्यों का चिंतन	कनिष्क पब्लिशर्स, संस्करण-2009
6	शास्त्री, श्री बाबूलाल शुक्ल	नाट्यशास्त्रम्	चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, संस्करण-प्रथम 1978

पत्र पत्रिकाएं

क्रम सं.	पत्रिका का नाम एवं वर्ष	प्रकाशन
1	संगीत, जून 1984	संगीत कार्यालय हाथरस (उत्तर प्रदेश)

कोश ग्रंथ

क्रम सं.	लेखक	कोश	प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष
1	दीक्षित, कृष्णकान्त	मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश	कमला प्रकाशन
2	शर्मा, आचार्य रामचंद्र	प्रामाणिक हिंदी कोश	लोक भारती प्रकाशन, 1996
3	कुमार अरविंद, कुमार कुसुम	समांतर कोश	नेशनल बुक ट्रस्ट, 2013
4	सिंह, पुष्पपाल	राजकमल बृहद हिंदी शब्दकोश	राजकमल प्रकाशन, 2017
5	चातक, गोविन्द	बृहद हिन्दी पर्यायवाची शब्द-कोश	तक्षशिला प्रकाशन, 1985